'kk- होलकर विज्ञान महाविद्यालय में प्रथम परिचयात्मक कार्यशाला

dk vk;kstu dh fjiksVZ

fnukad % 01@10@2014

e/;प्रदेश के p;fur 12 egkfo|ky;ksa dh jk"Vªh; ,oa vrjk"Vªh; [;kfr çkIr lLFkkuksa ls lk>nkjh djus gsrq dk;Z;kstuk cukus ds fy, ,d fnolh; कार्यशाला का vk;kstu fnukad 27@09@2014 dks 'kk-gksydj foKku egkfo|ky;] bUnkSj esa fd;k x;kA

dk;Z'kkyk dk mn?kkVu eq[; vfrfFk Mk- Mh-ih- flag] dqyifr] nsoh vfgY;k fo'ofo|ky;] bUnkSj }kjk fd;k x;kA कार्यशाला की v/;{krk gksydj foKku egkfo|ky; ds çkpk;Z Mk- vkj- d- rqगनावत ने की। कार्यशkkyk esa mTtSu lHkkx] उच्च शिक्षा dh vfrfjDr lapkyd Mk- m"kk JhokLro ,oa blh ;kstuk ds ukMy dsUnz] उच्च शिक्षा उत्कृष्टrk lLFkku] Hkksiky dh निदेशक डॉ- ehjk fiYybZ o ukMy lsVj ds lfpo Mk- vfuy dekoj ikBd fo'ks"k :i esa mifLFkr FksA mDr dk;Z'kkyk esa pfUgr egkfo|ky;ksa ds iwoZ çkpk;Z rFkk ,d&,d lnL; ,oa vk;ksftr egkfo|ky; ds fofHkUu foHkkxksa ds foHkkxk/;{kksa us lgHkkfxrk nhA

iwFke l= %

dk;Z'kkyk dk iFke l= lqcg 11-00 cts izkjEHk gqvkA ljLorh onuk rFkk nhi iTtoyu ds i'pkr vfrfFk;ksa dk Lokxr fd;k x;kA Mk- foiqy dhfrZ 'kekZ] gksydj egkfo|ky;] bUnkSj }kjk dk;Z'kkyk ds mn~ns'; rFkk :ijs[kk dk iLrqfrdj.k ds mijkUr Mk- vfuy dekoj ikBd us 13 flrEcj 2014 dks mPp f'k{kk mRd"Vrk lLFkku esa vk;ksftr lykgdkj lfefr dh cSBd ds dk;Zokgh fooj.k ls voxr djk;kA rRi'pkr Mk- m"kk JhokLro] vfrfjDr lapkyd mTtSu lHkkx us mncks/ku fn;kA mUgksaus dgk fd 12 egkfo|ky;ksa dh lk>nkjh dh ;kstuk cgqr vPNh gS] blls lHkh egkfo|ky;ksa dk fodkl lEHko gSA ipeu leLVj ds fo|kfFk;ksa dks djok, tkus okys izkstsDV rFkk ,u-,l-,l- izkstsDV dk;ksZa Hkh bl izdkj lk>nkjh ls fd;s tkus pkfg,A ;kstuk dh funsZ'kd Mk- ehjk fiYybZ us bl izdkj dh ;kstuk dks ykHkizn crk;kA

orZeku ;qok ih<+h esa Hkkjh ÅtkZ gS] जिसे शिक्षक रोल मॉडल प्रस्तुत djrs gq, शिक्षा के माध्यम से उचित दिशा प्रदान कर सकते हैं। उक्त विचार देवी

अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलपति ,o e[; vfrfFk Mk- Mh- ih- सिंह ने कार्यशाला में 0;Dr fd,A mUgksu oreku e gk jgh fofHkUu çdkj dh vkijkf/kd çofÙk;k ij fprk 0;Dr dh rFkk lekt e pfj= fuek.k dh आवश्यकता एव eY;&vk/kkfjr शिक्षा पर cy देते हुए शिक्षकों से समाजोपयोगी शोध करने का आव्हान किया। mUgksu vkb-lh-Vh- dk viuku ij Hkh cy fn;kA

Mk- vkj- d- rxukor] ikpk; 'kk- gkydj foKku egkfo|ky; u crk;k fd io e 'kk/k d fo"k; ,d gh foHkkx rd lhfer jgr Fk ijUr] vc 'kk/k vUrfo"k;d gk x; g rFkk lHkh foHkkx vkil e tMdj lk>nkjh l 'kk/k dk i.k djr gA uokpkj djr g, gkydj foKku egkfo|ky; e स्नातक एवं स्नातकोत्तर d 20 p;fur fo|kfFk;k dk ;-th-lh- }kjk ikIr vunku l 'kk/k छात्रवृत्ति दी जाती gA egkfo|ky; d 80 Nk=k dk bUlik;j छात्रवृत्ति d rgr 'kk/k dju d fy, egkfo|ky; d ik/;kidk d lkFk lEc) fd;k x;k gA

f}rh; l= %

कार्यशाला के द्वितीय सत्र में मध्यप्रदेश के चयनित 12 egkfo|ky;k }kjk io fu/kkfjr fcUnvk tl & egkविद्यालयों में प्रयोगशालाओं की विशेषताएँ, egkfo|ky;k d lkFk vU; lLFkkvk dh lk>nkjh] egkfo|ky;k e uokpkj d ç;kl rFkk o lLFkk, ftul Hkkxhnkjh dh tk ldrh g vkfn ij viuh çLrfr;k nh xbA

iFke iLrfr mPp f'k{kk mRd"Vrk lLFkku d Mk- luhy feJk u nhA vkiu 'kk/k ifj;ktuk, ,o iLrdky; dh fo'k"krkvk d ckj e crk;kA mRd"Vrk lLFkku Hkfo"; e ub प्रयोगशाला cuku ij fopkj dj jgk g ftll ,e- ,l&lh- Hkkfrd 'kkL= d fo|kFkh ykHkkfUor gk ldA

f}rh; iLrfr टी.आर.एस. महाविद्यालय, रीवा द्वारा दी गई। टी.आर. एस. महाविद्यालय के विभिन्न विभागों द्वारा 10 शोध जर्नल प्रकाशित किये जाते हैं तथा यहाँ पुस्तकालय बहुत ही विकसित हैं। महाविद्यालय ने आने वाले समय में साझेदारी बढ़ाने पर जोर दिया।

तीसरे क्रम पर शासकीय मॉडल विज्ञान महाविद्यालय, जबलपुर द्वारा प्रस्तुति दी गई। इस महाविद्यालय में प्राणीशास्त्र तथा भूगर्भ विज्ञान के उत्कृष्ट संग्रहालय है। इस महाविद्यालय ने कुछ संस्थाओं के साथ साझेदारी भी की है तथा

महाविद्यालय को डी.एस.टी. की ग्रांट भी मिली हैं। इस योजना के कारण महाविद्यालय में बहुत से उपकरण है जो साझेदारी द्वारा वृहद उपयोग में लाये जा सकते हैं।

शा. स्वशासी कन्या महाविद्यालय सागर ने चौथे क्रम पर प्रस्तुति दी। महाविद्यालय में प्राध्यापको की कमी के कारण साझेदारी से शिक्षकों को जोड़ने के लिए सुझाव दिए गए। महाविद्यालय में कई प्रकार के नवाचार किए जा रहे हैं।

शा. महाराजा पी.जी.महाविद्यालय, छतरपुर ने अपनी प्रस्तुति में बताया कि इन्फ्रास्ट्रेक्चर के रूप में खेल एवं लायब्रेरी की सुविधाएं अच्छी हैं। नवाचार एवं शोध के क्षेत्र में महाविद्यालयों से सहयोग अपेक्षित है।

छठवें क्रम में इन्दौर के माता जीजा बाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय ने अपनी प्रस्तुति दी एवं महाविद्यालय में उपलब्ध विभिन्न संसाधनों की जानकारी प्रदान की। नवाचार को अपनाते हुए महाविद्यालय ने छात्राओं के लिए परिसर के अंदर ही प्रशिक्षण की सुविधाएँ उपलब्ध कराई हैं।

शासकीय के.आर.जी. कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर द्वारा अपनी प्रस्तुति में बताया गया कि वर्तमान में महाविद्यालय विभिन्न नवचारों को अपनाते हुए छात्राओं एवं शिक्षकों के लिए सामयिक विषयों पर चर्चाएँ आयोजित करता है। उन्होंने यह भी बताया कि ग्वालियर क्षेत्र के अंतर्गत विभिन्न संस्था से एम.ओ.यू. होने की संभावनाएँ हैं जिसका लाभ 12 महाविद्यालयों का समूह ले सकता हैं।

आठवें क्रम पर शासकीय सरोजनी नायडू कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल ने अपने महाविद्यालय की क्षमताओं एवं कमियों को बताया तथा विभिन्न क्षेत्रों में साझेदारी की संभावना वाले संस्थानों की जानकारी दी।

नवें क्रम पर माधव विज्ञान महाविद्यालय उज्जैन ने अपनी प्रस्तुति में शोध के क्षेत्र में अपने महाविद्यालय की क्षमताओं के बारे में तथा उनके यहॉ जारी डी.एस.टी. के प्रोग्रामों की जानकारी दी।

दसवें क्रम पर शासकीय पी.जी. महाविद्यालय शहडोल ने अपनी प्रस्तुति दी तथा बताया कि प्राणीशास्त्र ,वनस्पति शास्त्र विभाग अन्य महाविद्यालयों से साझेदारी करना चाहेगा।

शा. नर्मदा पी.जी. महाविद्यालय होंशगाबाद ने ग्यारहवें क्रम पर प्रस्तुति दी। इस महाविद्यालय की विशेषताओं में पुराने शोध पत्रों से भरा पुस्तकालय तथा

हरबेरियम तथा जीवाश्मों का संग्रहालय शामिल हैं। विशेष रूप में आई.टी. वाले क्षेत्र में सहयोग की अपेक्षा रखते हैं।

शा. होलकर विज्ञान महाविद्यालय, इन्दौर ने अपनी प्रस्तुति में महाविद्यालय में हो रहे नवाचार, वृहद शिक्षक एवं छात्र संख्या पर बल दिया। महाविद्यालय से प्रकाशित शोध–जर्नल तथा पुरस्कृत प्राध्यापक विशेष रूप से शोध के क्षेत्र में सराहनीय हैं। जिन संस्थाओं से पूर्व से एम.ओ.यू. है उसकी जानकारी दी गई तथा सुझाव दिया गया कि वे 12 महाविद्यालय आपस में एम.ओ.यू. स्थापित कर लें और उपलब्ध सुविधाओं आदि का आदान–प्रदान प्रारंभ करें।

ppk@r`rh; l=%

कार्यशाला में अंतिम सत्र में चर्चा हुई तथा निष्कर्ष निकाला गया कि इस योजना के सतत् रूप से क्रियान्वयन के लिए अधिक से अधिक शिक्षकों की भागीदारी सुनिश्चित करने पर बल दिया जाए। संकाय सदस्यों का आदान–प्रदान जनवरी 15 से प्रारंभ होना है, इसलिए महाविद्यालय स्तर पर चयन करने का कार्य प्रारंभ किया जाए। इस हेतु प्रत्येक महाविद्यालय को अपने प्रत्येक शिक्षक का विषय तथा शोध–विषय की जानकारी नोडल सेंटर को भेजनी होगी। आगामी वर्षों में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों से साझेदारी करने के लिए सभी प्रयासशील होंगे। इसके लिए साझेदारी वाले प्रत्येक महाविद्यालय को अपने शोध स्तर को बढ़ाने पर बल दिया गया। क्लस्टर के लिये सेन्ट्रल लेब बनाने पर भी जोर दिया गया। मेजर शोध प्रोजेक्ट की सभी महाविद्यालयों में कमी को देखते हुए इस पर विशेष प्रयास देने पर बल दिया गया। शासन से यह भी अनुरोध करने पर सहमति बनी कि शोध में लगे प्राध्यापकों को स्थानान्तरण से मुक्त रखना चाहिए। इस कार्यशाला में शोध के साथ अन्य गतिविधियां, जैसे सांस्कृतिक, साहित्यक, खेल–कूद आदि पर भी भविष्य में साझेदारी करने पर बल दिया गया।

çkpk;l

'kkldh; gkydj foKku egkfo|ky;
bUnkj ¼e0i0½

प्रथम परिचयात्मक कार्यशाला
दिनांक 27.9.2014
(राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों से साझेदारी हेतु)
आयोजक :
शासकीय होलकर विज्ञान महाविद्यालय
इन्दौर (म.प्र.)

NAAC ACCREDITED
INDORE